❍ 04 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗आप-आप कह बात की ?∗

➢➢ ∗डबल लाइट स्थिति द्वारा उडती कला का अनुभव किया ?∗

➢➢ ∗स्नेह का चुम्बक बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗लवलीं स्थिति का अनुभव किया ?∗

────────────────────────

✧ ☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

~~✧ ∗बापदादा अचानक डायरेक्शन दे कि इस शरीर रुपी घर को छोड़, देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीट होम में चले जाओ तो जा सकते हो?∗ युद्ध स्थल में युद्ध करते करते समय तो नहीं बिता देंगे! अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा!

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं विश्व को सर्वशक्तियों की किरणें देने वाला मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ"*

〰✧ ब्राह्मणों का विशेष कर्तव्य है-ज्ञान सूर्य बन सारे विश्व को सर्वशक्तियों की किरणें देना - सभी विश्व-कल्याणकारी बन विश्व को सर्वशक्तियों की किरणें दे रहे हो? मास्टर ज्ञान सूर्य हो ना। तो सूर्य क्या करता है? *अपनी किरणों द्वारा विश्व को रोशन करता है तो आप सभी भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्वशक्तियों को किरणें विश्व में देते रहते हो।*

〰✧ सारे दिन में कितना समय इस सेवा में देते हो? *ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्तव्य ही यह है। बाकी निमित्त मात्र। ब्राह्मण जीवन वा जन्म मिला ही है विश्व कल्याण के लिए।* तो सदा इसी कर्तव्य में बिजी रहते हो?

〰✧ जो इस कार्य में तत्पर होंगे, वह सदा निर्विग्न होंगे। *विघ्न तब आते हैं जब बुद्धि फ्री होती है। सदा बिजी रहो तो स्वयं भी निर्विग्न और सर्व के प्रति भी विघ्न विनाशक। विघ्न विनाशक के पास विघ्न कभी भी आ नहीं सकता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो।* स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देहभान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए।

〰✧ *ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर सारे दिन में यूज करके देखो।* ऐसे नहीं ऑर्डर करो - कन्ट्रोल और दो मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, 5 मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, इसलिए बीच-बीच में कन्ट्रोलिंग पॉवर को यूज करके देखते जाओ।

〰✧ *सेकण्ड में होता है, मिनट में होता है, ज्यादा मिनट में होता है, यह सब चेक करते जाओ।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फ़रिश्ते अर्थात् ज्योति की काया वाले।* सभी अपने को ब्राह्मण सो फ़रिश्ता समझते हो? अभी ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण से फ़रिश्ता बनने वाले हैं फिर फ़रिश्ता सो देवता बनेंगे -वह याद रहता है? *फ़रिश्ता बनना अर्थात् साकार शरीरधारी होते हुए लाइट रूप में रहना अर्थात् सदा बुद्धि द्वारा ऊपर की स्टेज पर रहना।* फ़रिश्ते के पाँव धरनी पर नहीं रहते। ऊपर कैसे रहेंगे? बुद्धि द्वारा। बुद्धि रूपी पाँव सदा ऊँची स्टेज पर। ऐसे फ़रिश्ते बन रहे हो या बन गये हो? ब्राह्मण तो हो ही - अगर ब्राह्मण न होते तो यहाँ आने की छुट्टी भी नहीं मिलती। लेकिन ब्राह्मणों ने फ़रिश्तेपन की स्टेज कहाँ तक अपनाई है? फ़रिश्तों को ज्योति की काया दिखाते हैं। प्रकाश की काया वाले। *जितना अपने को प्रकाश स्वरूप आत्मा समझेंगे- प्रकाशमय तो चलते फिरते अनुभव करेंगे जैसे प्रकाश की काया वाले फ़रिश्ते बनकर चल रहे हैं।* फ़रिश्ता अर्थात् अपनी देह के भान का भी रिश्ता नहीं, *देहभान से रिश्ता टूटना अर्थात् फ़रिश्ता।* देह से नहीं, देह के भान से। देह से रिश्ता खत्म होगा तब तो चले जायेंगे लेकिन देहभान का रिश्ता खत्म हो। तो यह जीवन बहुत प्यारी लगेगी। फिर कोई माया भी आकर्षण नहीं करेगी।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कोई भूल हो जाए तो बताना है"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा... इस संगमयुग में... *ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में... मनुष्य से देवता बनने की... ईश्वरीय गुणों को धारण करने की पढ़ाई पढ़ रही हूँ...* मैं आत्मा... शांतिवन के उपवन में... बैठी... निहार रहीं हूँ सभी *आत्माओं को जो मधुबन आयी हैं... अपने भाग्य को... सौभाग्य में बदलने... 21 जन्मों का स्वराज्य अधिकार प्राप्त करने... सजनी अपने साजन से मिलने... बच्चे अपने बाप से मिलने... मित्र अपने सखा से मिलने... शिष्य अपने गुरु से मिलने और माँ अपने बच्चे से मिलने आए हैं...* सब को देख में आत्मा एक अलौकिक स्वप्न में विहर रहीं हूँ... मैं देख रहीं हूँ... अपने आप को... पांडव भवन में... बाबा के कमरे में... जहाँ बाबा मुरली चला रहे हैं... सभी आत्मायें बैठी हैं... *बाबा से अलौकिक पढ़ाई पढ़ रहीं हैं...*

❉ *सफ़ेद संदली पे बैठे बाबा ने कहा :-* "मेरे सिकीलधे बच्चें... कल्प के बिछड़े बच्चे... अब मिले हो... *जन्म मरण के खेल को खेल खेल कर थक गए हो...* गोरे से काले हो गए हो... *अपनी शक्तियों से बेखबर शक्तिहीन हो गए हों... मुझ और खुद के भी अस्तित्व से अनजान बन गए हो...* सतयुगी स्वराज्य अधिकारी के पदाधिकारी... विश्वकल्याणकारी आत्मायें... अब क्या बन गई हो... अपने ओरिजिनल गुण... संस्कारो को... कहाँ खो कर आयी हो..."

➳ _ ➳ *बाबा की अमी दृष्टि देख कर मैं आत्मा बाबा से कहती हूँ :-* "मेरे बाबा... *सौभाग्य हमारा जो आप मिले... अहोभाग्य हमारा जो हमें सच्चा सच्चा गीता का ज्ञान मिला... अपनी सच्ची पहचान मिली...* इस कलियुग में... हमें आप का सहारा मिला... दर दर भटकते... दर दर की ठोकरे खाते... लड़खड़ाते पैरो को... मंजिल मिल गई... *कोटि बार शुक्रिया बाबा जो आपने हमें ढूंढा... सहारा दीया... स्वराज्य अधिकारी के लायक बनाया..."*

❉ *गुल गुल गुलो के बागबान समान मेरे बाबा बोले :-* "मेरी राज दुलारी... मेरी लाडली बच्ची... तुझे तो मैंने दिल से ढूंढा हैं... अपने दिलतख्त पर बिठाया हैं... *तेरी जन्मों की पुकार को... जन्मों की भक्ति को फलस्वरूप बनाने आया हूँ... इस अलौकिक पढाई को... इस ईश्वरीय श्रीमत को... परे तन-मन-धन से

यथार्थ रीति पढ़ना और पढ़ाना... सेवा का सरताज बनना और बनाना..."*

➳ _ ➳ *अलौकिक तेज से भरपूर मेरे बाबा को मैं आत्मा कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे बाबा... इस कलियुगी वातावरण में... *मैं आत्मा... स्वर्ण से कंकड़ बन गई हूँ... तू जो मिला... स्वर्ग के द्वार खुल गए... इस अप्रतिम पढ़ाई से... अवर्णनीय स्वर्ग की प्राप्ति हो गई है... सतयुगी गुणों और संस्कारों की स्वरूप बन गई हूँ... सच्ची सेवाधारी बन... सेवा के लक्ष्य को प्राप्त कर रहीं हूँ..."*

❇ *सुख के सागर... मेरे प्यारे बाबा बोले :-* "रूहानी गुलाब सी मेरी प्यारी बच्ची... *यह अविनाशी ज्ञान यज्ञ है... अपने विकर्मों को... स्वाहा कर...* मुझ गुरु को अपने पुराने स्वभाव संस्कार का दान दे दो... बदले में 21 जन्मों का स्वराज्य अधिकार प्राप्त कर लो... *मैं तुम्हारा बाप हूँ... तो टीचर भी हूँ... गुरु भी हूँ... तो कोई भी विकर्मों का बोझ हो... मुझसे छुपाना नहीं... अपनी गलती... मुझे बता कर फ्री हो जाना... अपने भाग्य की लकीर को कटने मत देना... 21 जन्मो की सतयुगी बादशाही को... भूल से भी विकर्मों को छुपा कर गवा मत देना..."*

➳ _ ➳ *प्यार भरी आँखो से बाबा के हाथ चूमती मैं आत्मा... बाबा से कहती हूँ :-* "मेरे बाबा... *आप की सतयुगी पढ़ाई ने... आपकी श्रीमत ने... इस संगमयुग में... मुझ आत्मा को कमल पुष्प समान बना दिया हैं... कौड़ी की कीमत थी मेरी... तूने हीरे तुल्य बना दिया है...* अब विकार मुक्त जीवन... तन-मन-धन सब बन गया हैं... *जन्मों जन्म के सुक्ष्म ते सूक्ष्म पाप को भी मैं आत्मा योग अग्नि में स्वाहा कर रहीं हूँ... और यह जीवन संगमयुग का सफल कर रहीं हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- परचिन्तन से अपनी सम्भाल करनी है*"

➳ _ ➳ 63 जन्मो से देह और देहधारियों के चिंतन में फंसी आत्मा आज इतनी दुखी और अशांत हो गई है जिसका अनुभव आज हर मनुष्य कर रहा है, *मन ही मन अपने आप से यह बातें करती हुई मैं विचार करती हूँ कि जिस नश्वर देह और देह से जुड़े पदार्थो के साथ आज हर मनुष्य आत्मा ने अपनी प्रीत जोड़ रखी है वो झूठी प्रीत ही तो उसके दुख का कारण है*। इस दुख और अशांति से छूटने का केवल एक ही उपाय है जो इस समय स्वयं भगवान आ कर बता रहें हैं और वह है देह और देहधारियों के चिंतन को छोड़ स्व चिन्तन और परमात्म चिन्तन में मन बुद्धि को बिज़ी रखना।

➳ _ ➳ अपने प्यारे पिता द्वारा दिये जा रहे इस सत्य ज्ञान को जीवन में धारण कर, अपने मन और बुद्धि को इस नश्वर देह और देह से जुड़ी हर बात से हटाकर, स्व चिंतन करते हुए, अपने सत्य स्वरूप का गहराई से अनुभव करने के लिए अब मैं अपना सम्पूर्ण ध्यान अपने स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ और *महसूस करती हूँ कि धीरे - धीरे एकाग्रता की शक्ति ने मेरे मन बुद्धि को पूरी तरह मेरे उस निराकारी स्वरूप पर स्थित कर दिया है*। सिवाए मेरे निराकारी ज्योति बिंदु स्वरूप के अब और कुछ भी मुझे दिखाई नही दे रहा। जैसे अर्जुन को सिवाय मछली की आँख के उस बिंदु के और कुछ भी दिखाई नही दे रहा था जहाँ उसे निशाना साधना था। ठीक *इसी प्रकार अपनी सम्पूर्ण देह में मुझे केवल भृकुटि के भव्य भाल पर चमकती हुई चैतन्य ज्योति ही दिखाई दे रही है*।

➳ _ ➳ उस जगमग करती चैतन्य ज्योति को बड़े प्यार से मन बुद्धि के दिव्य नेत्र से मैं निहार रही हूँ जो एक अति सूक्ष्म चमकते हुए चैतन्य सितारे की भांति दिखाई दे रहा है। *जैसे आकाश में चमकते हुए सितारे में से किरणे निकलती हैं ऐसे मुझ आत्मा सितारे में से भी शांति, प्रेम, आनंद, सुख, पवित्रता, ज्ञान और शक्ति की सतरंगी किरणे निकल रही हैं*। अपने मन और बुद्धि को पूरी तरह अपने सत्य स्वरूप, गुणों और शक्तियों पर फोकस कर, कुछ क्षणों के लिए मैं खो जाती हूँ अपने इस अति सुखमय स्वरुप में। बड़े प्यार से मैं अपने इस स्वरूप को निहार रही हूँ और *देख रही हूँ कि कितना शुद्ध और शक्तिशाली है मेरा वास्तविक स्वरूप, जिससे मैं आज दिन तक अनजान थी*।

➳ _ ➳ मन ही मन मैं अपने प्यारे पिता का दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने आकर मुझे मेरे इस सत्य स्वरूप की पहचान करवाई। *अपने इस अति सुखदाई सत्य स्वरुप का भरपूर आनन्द लेकर, अपने प्यारे पिता के स्वरूप पर अपने मन बुद्धि को एकाग्र कर, मन बुद्धि के विमान पर बैठ अब मैं पहुँच जाती हूँ अपने प्यारे पिता के पास उनके निजधाम परमधाम घर में*। देख रही हूँ मैं अपने प्यारे पिता को अपने बिल्कुल सामने जो दिखने में मेरी ही तरह बिंदु हैं किंतु गुणों में सिंधु है।

➳ _ ➳ उनसे आ रही सर्वशक्तियों की अनन्त किरणे फैलकर मेरे चारों और सुरक्षा का दायरा बना रही हैं। कभी मैं अपने आप को देखती हूँ तो कभी सर्वशक्तियों के दाता अपने शिव पिता को। कितना प्यारा और अलौकिक मिलन है यह। *कितनी निराली और प्यारी लाल प्रकाश की दुनिया है यह। यहाँ आकर, स्वयं को अपने प्यारे पिता के सानिध्य में मैं धन्य धन्य अनुभव कर रही हूँ*। वाह मैं आत्मा, वाह मेरे बाबा, जो मुझे अपनी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रहे हैं। *इस बीज रूप स्थिति का सुंदर अनुभव करने के बाद मैं आत्मा लौट आती हूं साकारी दुनिया में*।

➳ _ ➳ साकारी ब्राह्मण तन में भृकुटि पर विराजमान होकर, अपने वास्तविक स्वरुप की स्मृति में स्थित होकर अब मैं हर कर्म कर रही हूँ। स्व चिंतन करते हुए, अपने गुणों और शक्तियों का अनुभव मुझे मेरे आनन्दमयी, सुखमयी स्वरूप में स्थित रखने के साथ - साथ सबको आत्मिक दृष्टि से देखने की स्मृति दिलाता है। *सबको आत्मा भाई - भाई की दृष्टि से देखने के अभ्यास से मेरी दैहिक दृष्टि वृति परिवर्तन हो रही है इसलिए देह और देह से जुड़ी हर बात के चिंतन से मैं स्वत: ही मुक्त होती जा रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं डबल लाइट स्थिति द्वारा उड़ती कला का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*

✺ *मैं सर्व आकर्षण मुकत आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव स्नेह का चुम्बक बन जाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा ग्लानि करने वालों को भी समीप आते अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा ग्लानि करने वालों से भी स्नेह के पुष्पों की वर्षा करवाती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सेवा तो बहुत करते हैं, दिन-रात बिजी भी रहते हैं। प्लैन भी बहुत अच्छे-अच्छे बनाते हैं और सेवा में वृद्धि भी बहुत अच्छी हो रही है। फिर भी मैजारिटी का जमा का खाता कम क्यों? तो रूह-रूहान में यह निकला कि सेवा तो सब कर रहे हैं, अपने को बिजी रखने का पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हैं। फिर कारण क्या है? तो यही कारण निकला *सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की संतुष्टता और फल है सर्व की संतष्टता।* अगर सेवा की, मेहनत और समय लगाया तो दिल की संतष्टता और

सर्व की संतुष्टता, चाहे साथी, चाहे जिन्हों की सेवा की दिल में सन्तुष्टता अनुभव करें, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहके चले जायें, नहीं। दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो। कुछ मिला, बहुत अच्छा सुना, वह अलग बात है। कुछ मिला, कुछ पाया, जिसको *बापदादा ने पहले भी सुनाया - एक है दिमाग तक तीर लगाना और दूसरा है दिल पर तीर लगाना।* अगर सेवा की और स्व की संतुष्टता, अपने को खुश करने की संतुष्टता नहीं, बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ, नहीं। दिल माने स्व की भी और सर्व की भी।

➳ _ ➳ और दूसरी बात है कि *सेवा की और उसकी रिजल्ट अपनी मेहनत या मैंने किया... मैंने किया यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। जमा नहीं हुआ।* बापदादा ने कराया, बापदादा के तरफ अटेन्शन दिलाया, अपने आत्मा की तरफ नहीं। यह बहन बहुत अच्छी, यह भाई बहुत अच्छा, नहीं। *बापदादा इन्हों का बहुत अच्छा, यह अनुभव करना - यह है जमा का खाता बढ़ाना।* इसलिए देखा गया टोटल रिजल्ट में मेहनत ज्यादा, समय- एनर्जी ज्यादा और थोड़ा-थोड़ा शो ज्यादा। इसलिए जमा का खाता कम हो जाता है। जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन *जमा की डायमण्ड चाबी है 'निमत्त भाव और निर्मान भाव'।* अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं *सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्मान भाव, निःस्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा।* बापदादा ने जगत अम्बा माँ को दिखाया कि इस विधि से सेवा करने वाले का जमा का खाता कैसे बढ़ता जाता है। बस, *सेकण्ड में अनेक घण्टों का जमा खाता जमा हो जाता है।* जैसे टिक-टिक-टिक जोर से जल्दी-जल्दी करो, ऐसे मशीन चलती है। तो जगत अम्बा बड़बी खुश हो रही थी कि जमा का खाता, जमा करना तो बहुत सहज है।

✺ *ड्रिल :- "सेवा द्वारा सहज जमा का खाता बढ़ाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ पांडव भवन में... बापदादा के कमरे में बैठी मैं आत्मा... अपने मन को बाहरी दुनिया से समेट कर लगा देती हूँ सिर्फ एक बिंदु रूपी बाप पर... *मन बदिध के तार बापदादा से जडते ही बाबा के कमरे में दिव्य सगंध की

लहर फ़ैल जाती हैं...* बापदादा का फ़रिश्ता स्वरुप प्रत्यक्ष मुझ आत्मा को प्रतीत हो रहा हैं... *बापदादा का चमकता हुआ ओरा... चांदनी सा प्रकाश फैला रहा हैं... दैदीप्यमान स्वरुप मेरे बापदादा का देख मैं आत्मा भाव विभोर हो जाती हूँ...* बापदादा से निकलती पवित्र किरणों का झरना मुझ आत्मा में स्वतः धारण होता जा रहा हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा शक्तियों से परिपूर्ण होती जा रही हूँ... अपने 63 जन्मो के विकर्मो को नष्ट होता हुआ देख रही हूँ... अपने आप को एक संपूर्ण फ़रिश्ते स्वरुप में परिवर्तित होता देख रही हूँ.... लेकिन *मेरा फ़रिश्ता स्वरुप आधा ही इमर्ज होता हुआ दिखाई दे रहा हैं...* और मैं आत्मा अचरज भरी निगाहों से बापदादा को देख रही हूँ... मेरे संकल्पों को जान बापदादा मुझ आत्मा को एक सीन दिखा रहे हैं... जहाँ मैं आत्मा देख रही हूँ अपने आप को... *बापदादा के महायज्ञ में अपने मन वचन कर्म से सेवा को सफल करने में लग गई हूँ...*

➳ _ ➳ हर घड़ी... हर पल बापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में मग्न रहती मैं आत्मा... स्वयं को संतुष्ट करती जा रही हूँ... सेवा में संकल्प को... बोल को... पूर्ण रूप से सफल कर रही हूँ... *मुझ आत्मा का सेवा के प्रति लगन में सिर्फ एक ही कमी रह जाती थी... निमित्त और निर्माण भाव की प्रत्यक्षता...* मैं आत्मा सेवा में निमित्त भाव को प्रत्यक्ष नहीं कर पा रही थी... देह अभिमान रूपी संस्कार के वशीभूत मैं आत्मा... मेरेपन को पूर्ण रूप से मिटा नहीं पा रही थी... बापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में देह अभिमान रूपी कंटक को दूर नहीं का पा रही थी... *दिल की सेवा नहीं दिमाग की सेवा में उलझ गई थी...*

➳ _ ➳ *अपने जमा के खाते को न बढ़ाते... खर्च करती जा रही तो...* सेवा में परिपूर्णता का झलक नहीं दिखाई दे रही थी... इसीलिए मुझ आत्मा का फ़रिश्ता स्वरुप आधा दिखाई दे रहा था... मैं आत्मा अब अपने फ़रिश्ता स्वरुप को इमर्ज न करने का कारण जान कर बापदादा को कोटि बार धन्यवाद करती हूँ... और सेवा को सच्ची दिल की लगन से सफल करने का पक्का और सच्चा वादा करती हूँ... मेरेपन का संकल्प भी त्याग करती हूँ... *बापदादा का कार्य... बापदादा ने करवाया... मैं सिर्फ निमित्त हूँ... यह भावना... यह संकल्प को सुनहरे अक्षरों से अपने दिल-दिमाग में अंकित करती हूँ...*

➳ _ ➳ बापदादा को एक वादा करती हूँ... *मेरेपन के अभिमान का त्याग कर दूगी...* और दिल की सेवा जो दिल में तीर बन कर लग जाये... बापदादा की प्रत्यक्षता हो जाये न कि मुझ आत्मा का मान बढे... ऐसे अब यज्ञ में खुद को स्वाहा कर देना हैं... *सेवा के समय निमित्त भाव... शुभ भाव इमर्ज हो जाये और न कि खुद आत्मा के वाह वाह के भाव इमर्ज हो जाये...* निःस्वार्थ शुभ भाव... शुभ कामना रूपी शक्तियों का आह्वान करती मैं आत्मा लौकिक का हर कार्य अब तो बापदादा को प्रत्यक्ष करने में मग्न हो गई हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔